Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 1, April-2018, ISSN 2230-7540

संस्कृत व्याकरण के विकास का अध्ययन

Dr. Badlu Ram Shastri*

Lecturer in Sanskrit, B.S.R. Govt. Arts College, Alwar, Rajasthan

संक्षेपण:- संस्कृत का व्याकरण वैदिक काल में ही एक स्वतंत्र विषय बन गया था। नाम, प्रख्यात, उपसर्ग और निपटा - इन चार बुनियादी तथ्यों को 700 से पहले ही व्याकरण में जगह मिली थी। कई व्याकरण पाणिनि (लगभग 550 ईसा पूर्व) से पहले लिखे गए थे, जिसमें आजिशली और काशकृत्नों के केवल कुछ ही सूत्र उपलब्ध हैं। लेकिन संस्कृत व्याकरण का पदानुक्रमित इतिहास पाणिनि से शुरू होता है। इस लेख में संस्कृत व्याकरण के विकास का अध्ययन किया गया है।

प्रमुख शब्द:- व्याकरण का विकास, पाणिनी व्याकरण, गणपाठ एवं धातुपाठ, संस्कृत व्याकरण का दार्शनिक व्याख्या, यूरोप के विद्वानों का योगदान एवं निष्कर्ष।

----------X----------

संस्कृत व्याकरण का इतिहास

व्याकरण शास्त्र का एक बड़ा इतिहास है, लेकिन महामुनि पाणिनि और उनके द्वारा प्रवर्तित अष्टाध्यायी इसके केंद्र बिंदु हैं। पाणिनि ने अष्टाध्यायी में 3995 सूत्रों की रचना करके भाषा के नियमों की व्यवस्था की, वाक्यों में पदों का संकलन, पदों की प्रकृति, प्रत्यय विभाग और पदों की रचना आदि प्रमुख तत्व हैं। इन नियमों को पूरा करने के लिए, धातु पाठ, गण पाठ और उनादि सूत्र भी पाणिनि द्वारा बनाए गए थे। सूत्रों में, कात्यायन ने उपरोक्त, उपाख्यान और अनुचित विषयों पर विचार करने के बाद वाटिका की रचना की। बाद में महामुनि पतंजलि ने महाभाष्य की रचना की और संस्कृत व्याकरण को पूर्णता प्रदान की। इन तीन आचार्यों को 'त्रिमुनी' के नाम से जाना जाता है। उन्हें प्राचीन व्याकरण में अनिवार्य रूप से अध्ययन किया जाता है।

नव्य व्याकरण के अंतर्गत शास्त्रों का अध्ययन प्रक्रिया क्रम के अनुसार किया जाता है, जिसमें आचार्यों, भट्टोजिदीक्षित, नागेश भट्ट आदि के ग्रंथों का अध्ययन मुख्य है। प्राचीन व्याकरण और नया व्याकरण दो स्वतंत्र विषय हैं।

उद्देश्य:

1. संस्कृत व्याकरण के विकास का अध्ययन किया गया है।
2. पाणिनि व्याकरण, दार्शनिक विवेचन एवं यूरोपीय विद्वानों के योगदान का अध्ययन किया गया है।

परिकल्पना:

1. संस्कृत भाषा के विकास में महान व्याकरणाचार्य हुए हैं।
2. व्याकरण के विकास में पाणिनि, कात्यायन एवं नागेश भट्ट के कार्य महत्वपूर्ण हैं।

सूचना संग्रह:

प्रस्तुत अध्ययन में सूचनाओं का संकलन कालिदास की विभिन्न रचनाओं, साहित्कारों, साहित्य संगोष्टी एवं पुस्तकालयों का अध्ययन करके किया गया है।

व्याकरण का विकास:

पाणिनि ने वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत दोनों के लिए अष्टाध्यायी की रचना की। अपने लगभग चार हजार सूत्रों में, उन्होंने हमेशा के लिए संस्कृत भाषा को बदल दिया। उनका प्रत्याहार, संविदा आदि सूक्ष्म और वैज्ञानिक हैं जैसे गणित के नियम। उनके सूत्र में व्याकरण और दर्शन से संबंधित कई महत्वपूर्ण तथ्य हैं।

कात्यायन (लगभग 300 ईसा पूर्व) ने पाणिनि के स्रोतों पर लगभग 4295 लेख लिखे। पाणिनि की तरह उनका ज्ञान भी

www.ignited.in

व्यापक था। उन्होंने लोक जीवन के कई शब्दों को संस्कृत में शामिल किया और निर्णय और परिभाषाओं के माध्यम से व्याकरण के दायरे का विस्तार किया।

पतंजलि (150 ईसा पूर्व) ने कात्यायन वार्ता पर महाभाष्य की रचना की। महाभाष्य और ग्रंथ आते हैं। इसमें लगभग सभी दार्शनिक वादों के बीज हैं। इसकी शैली अनूठी है। इस पर कई टीकाएँ हैं, जिनमें भर्तृहरि की त्रिपदी, केयत की प्रदीप और शेषनारायण की "सूक्तिरत्नाकर" प्रसिद्ध हैं। सूत्रों के अर्थ, उदाहरण आदि की व्याख्या करने के लिए, कई वृत्तिग्रन्थ लिखे गए, जिनमें काशिका वृत्ति (छठी शताब्दी) महत्वपूर्ण है। यह जयदित्य और वामन नाम के आचार्यों का मनोहर कार्य है। उस पर जिनेंद्रबुद्धी (लगभग 650 ई।) की काशीकाविरवानपंजिका (न्यास) और हरदत्त की पद्मंजरी (1200 ईस्वी) सर्वश्रेष्ठ टीकाएँ हैं। काशिका की पद्धति पर लिखे गए ग्रंथ भागवृति (अनुपलब्ध), पुरुषोत्तमदेव (ग्यारहवीं शताब्दी) के भाषा विज्ञान, और भट्टोजी दीक्षित (1600 ई।) की शब्दावली हैं।

पाणिनि के सूत्र के क्रम को बदलकर कुछ जुलूस भी लिखे गए, जिसमें धर्मकीर्ति (ग्यारहवीं शताब्दी) के रूपवतार, रामचंद्र की बारात (1400 ईस्वी), भट्टोजि दीक्षित के सिद्धान्तकुडी और नारायण भट्ट (सोलहवीं शताब्दी) के जुलूस उल्लेखनीय नहीं हैं।। कर्मकुडी पर "प्रसाद" और शेष कृष्णचरित "प्रक्रिया प्रकाश" पठनीय हैं। सिद्धान्त कौमुदी के भाष्य में सिद्धमनोरमा, तत्त्वबोधिनी और शबेंदुशेखर उल्लेखनीय हैं। हरि दीक्षित का शब्ददर्शन भी पुद्दमनोरमा पर प्रसिद्ध है।

व्याकरण का इतिहास नागेश भट्ट (1700 ई।) के बाद मिटता है। कमेंट्री कमेंटरी पर उपलब्ध हैं। किसी में भी न्याय दिखता है। वैद्यनाथ पयगुंड, विश्वेश्वर, ओरमभट्ट, भैरव मिश्र, राधवेन्द्राचार्य गजेंद्रगढ़कर, कृष्णमित्र, नित्यानंद परवतिया और जयदेव मिश्र के उल्लेखनीय नाम पाणिनिसंप्रदाय के पिछले दो सौ वर्षों के प्रसिद्ध टीकाकारों में उल्लेखनीय हैं।

पाणिनि व्याकरणः

पाणिनि व्याकरण के अलावा, इस समय उपलब्ध अन्य सभी संस्कृत व्याकरण पाणिनि की शैली से प्रभावित हैं। बेशक, कुछ लोग आनंद व्याकरण को पाणिनि से पूर्व मानते हैं। लेकिन यह राय बिना शक के नहीं है। बर्नल के अनुसार, एंद्रा व्याकरण, कान्तंत्र और तमिल के सबसे पुराने व्याकरण, तोल्कापियाम से संबंधित है। सातवाहन युग में, अण्डर व्याकरण पर आधारित, शर्व वर्मा ने कांन्त्र व्याकरण की रचना की। इसके अन्य नाम भी कल्पक और कौमार हैं। इस पर दुर्ग सिंह की टिप्पणी प्रसिद्ध है। चंद्र व्याकरण चंद्रग्राम (500 ई।) की रचना है। इस पर उनकी एक वृत्ति भी है। वेस इसकी शैली से प्रभावित हैं। जैनेंद्र ग्रामर जैन आचार्य देवनंदी (लगभग छठी शताब्दी) की एक रचना है। इस पर अभयानंद की वृत्ति प्रसिद्ध है। उदाहरण में, जैन संप्रदाय के शब्द मिलते हैं। जैनेंद्र व्याकरण के आधार पर, 9 वीं शताब्दी में एक जैन आचार्य ने शक्तयन व्याकरण लिखा और उस पर अमोघवती की रचना की। इस पर प्रभाचंद्रचार्य की न्यास और यक्ष वर्मा की वृत्ति प्रसिद्ध है। भोज के सरस्वती कंठाभरण व्याकरण में (ग्यारहवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में), वर्तिका और गणपति को सूत्रों में मिलाया गया है। पाणिनि के अनदेखे शब्दों के लिए सुबोध शब्दों को प्रतिस्थापित किया गया है। इस पर दंडनाथ नारायण की हृदयहारिणी टीका है। सिद्ध हेम या हेम व्याकरण आचार्य हेमचंद्र (ग्यारहवीं शताब्दी) द्वारा रचित है। इसमें संस्कृत के साथ-साथ प्राकृत और अपभ्रंश व्याकरण भी शामिल हैं। इस पर, लेखक का विश्वास और देवेंद्र सूरी की किंवदंतियाँ उल्लेखनीय हैं। सारस्वत व्याकरण के कर्ता अनुभूति स्वरूपाचार्य (तेरहवीं शताब्दी) हैं।

सारस्वत प्रक्रिया और रघुनाथ के छोटे वाक्य ध्यान देने योग्य हैं। यह बिहार में अंतिम पीढ़ी तक प्रचारित किया गया था। बोपदेव (तेरहवीं शताब्दी) का मुग्दबोध व्याकरण काफी सरल है। इसका प्रचार हाल तक बंगाल में रहा है। पद्मनाभ दत्त ने लिखा (15 वीं शताब्दी) सुप्रम व्याकरण। शेष श्रीकृष्ण (16 वीं शताब्दी) पादचंद्रिका एक स्वतंत्र व्याकरण है। इस पर उनके पद उल्लेखनीय हैं। क्रेमदासवारा का ब्रीफ़र (जूमेर) और रूपगोस्वामी का हरि नाममात्र भी स्वतंत्र व्याकरण हैं। कवींद्राचार्य के संग्रह में ब्रह्मविचार, यमवाक्यराना, वरुणवारीकरन, सौम्य वकारिकरन और व्याकरणकर्ण की हस्तलिपि थी, जिसका आज कोई विशेष ज्ञान नहीं है। प्रसिद्ध लेकिन अनुपलब्ध व्याकरणों में, वामनारिता वसंतविद्याधर उल्लेखनीय हैं।

गण पाठ और धातु पाठः

प्रमुख संस्कृत व्याकरणों के अपने गणपाठ और मठापथ हैं। वर्धमान (12 वीं शताब्दी) के गणरत्नमोधी और भट्ट यज्ञेश्वर के गणरत्नावली (1874 ई।) गणपत से संबंधित स्वतंत्र ग्रंथों में प्रसिद्ध हैं। उजालादत्त ऊनादी के वर्णनकर्ताओं में प्रमुख हैं। काशकृत्स्न का धातु पाठ कन्नड़ भाषा में प्रकाशित हुआ है। भीमसेन का लेख तिब्बती (भोट) में प्रकाशित हुआ है। पूर्णचंद्र के धतुरपरायण, मैत्रेयरक्षित (दसवीं शताब्दी) के धातिप्रदीप, क्षीरस्वामी की क्षीरतृंगिनी (दसवीं शताब्दी), सायना की माधवमत्रावस्ति, श्रीहरकीर्ति की धात्विकरानी, काट्यिकपादपाद, क्रविकपदपाद लिंगानुशासन पाणिनि,

वररुचि, वामन, हेमचंद्र, शक्तयान, शांतनवाचार्य, हर्षवर्धन आदि के लिंगबोधक ग्रंथों में प्रचलित है। इस विषय पर प्राचीन पुस्तक "लिंगार्णिका" अनुपलब्ध है।

संस्कृत व्याकरण की दार्शनिक व्याख्या:

संस्कृत व्याकरण का दार्शनिक पहलू व्याधि (लगभग 400 ईसा पूर्व) के "संकलन" से शुरू होता है, जिसके कुछ वाक्य आज अवशेष हैं। भर्तृहरि का क्रमबद्ध व्याकरण (लगभग 500 ई।) दर्शन का सर्वोत्तम कार्य है। आत्म-ज्ञान के अलावा, वृषभदेव (छठी शताब्दी), पुण्यराज (नौवीं शताब्दी) और हेलराजा (दसवीं शताब्दी) के भाष्य इस पर विस्तृत हैं। कौंडभट्ट (१६०० ई।) के व्याकरणभूषण और नागेश के व्याकरणाचार्य सिद्धान्तमंजुशा उल्लेखनीय हैं। नागेश की स्फोटिज्म, कृष्णभट्ट की स्फोटचंद्रिका और भारतमिश्र की स्फोटसिद्धि भी इस विषय के लघु ग्रंथ हैं। सिरदेव की परिभाषा, पुरुषोत्तमदेव की परिभाषा, विष्णुशेख की परिभाषा और नागेश की परिभाषा पठनीय है। पिछले डेढ़ वर्षों में, ज्ञान, भैरवी, भावार्थदीपिका की परिभाषा पर लगभग 25 टीकाएँ लिखी गई हैं, इसके अलावा तात्या शास्त्री पटवर्धन, गणपति शास्त्री जोकते, भास्कर शास्त्री, वासुदेव अभ्यंकर, मनुदेव, चिदप्रासैया आदि के भाष्य भी हैं।

यूरोप के विद्वानों का योगदान:

संस्कृत व्याकरण के इतिहास में, यूरोप के विद्वानों का भी योग है। पी। सासेती, जो 1583 से 1588 तक भारत में थे, उन्होंने संस्कृत और इटली की भाषा दिखाई। लेकिन संस्कृत व्याकरण जर्मन-यहूदी जे है। ई। हैक्सडेलीन ने लिखा। उनके अप्रकाशित कार्य के आधार पर, जर्मन पादरी पॉलिनस ने 1790 में संस्कृत व्याकरण प्रकाशित किया, जिसे "सिद्ध रुम सु व्यामटिका संस्कृदमिका" नाम दिया गया। 1802 में, फोर्ट विलियम कॉलेज के शिक्षक डॉ। विलियम कैरी ने अंग्रेजी में संस्कृत व्याकरण प्रकाशित किया। विलियम कोलब्रुक ने 1805 में संस्कृत व्याकरण, 1808 में विलिंक्स, 1810 में फॉरेस्टर लिखा था। 1823 में ओथम फ्रैंक ने लैटिन भाषा में संस्कृत व्याकरण लिखा था। 1834 में बोप्प ने जर्मन भाषा में "क्रिटिसक ग्रामैटिक डी संस्कृत स्प्राख" नाम से संस्कृत व्याकरण लिखा। बेन्फेई ने 1863 में अपना संस्कृत व्याकरण, 1870 में कीलरन, 1877 में मोनियर विलियम्स और 1879 में अमेरिका का व्हिटनी प्रकाशित किया। एल। रेनो ने फ्रेंच भाषा में संस्कृत व्याकरण (1920) और वैदिक व्याकरण (1952) प्रकाशित किया। पाठ और धातु कार्य के संबंध में, वेस्टरगार्ड के रीडिस लिंगवा संस्क्रित (1841), बोटलिंक की पाणिनी ग्रामाटिक (1887), लिबिश की धातुकार्य (1920) और रॉबर्ट बिर्वे की "डेर गणपत" (1961) उल्लेखनीय हैं। यूरोप की विद्वतापूर्ण कृतियों में मैकडोनेल के "वैदिक व्याकरण" (1910) और वकारेनेल की "अल्टाइंडिश ग्रामाटिक" (3 भाग, 1896-1954) हैं। अंग्रेजी में लिखी गई श्री काले की "उच्च संस्कृत व्याकरण" भी प्रसिद्ध है।

निष्कर्ष:

संस्कृत व्याकरण का विकास पिछले ढाई हजार वर्षों से टिप्पणी के माध्यम से निर्बाध रूप से आगे बढ़ रहा है। इसे जीवित रखने में, यह हजारों अज्ञात विद्वानों का सहयोग रहा है, जिन्होंने कोई ग्रंथ नहीं लिखा, लेकिन व्याकरण पढ़ाने में अपना जीवन बिताया। पाणिनी की अष्टाध्यायी, कात्यायन की प्रतिज्ञा, पतंजलि के महा-पौत्र और विभिन्न संगोष्ठी आयोजनों के माध्यम से संस्कृत व्याकरण का विकास हुआ है।

संदर्भ सूची:

1. अष्टाध्यायी सूत्रपथ, पाणिनि, संपादक-ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़ सोनीपत वी.एस. 2050
2. काशीकावृत्तिः, न्यासपद्मजृयता वामनजयदित्य, संपादक - द्वारकादासत्री, कालिकाप्रसाद शुक्लः सुधी प्रकाशन, वाराणसी, द्वितीय श्रेणी 1983
3. काशीकावृतीः, जयदित्य वामन अनंतसस्त्र एडिफा, चैखम्बा प्रकाशन वाराणसी, 1937
4. पद्मजारी; हरदत्त मिश्र दामोदर शास्त्री, तारा प्रकाशन, वाराणसी, १ ९ ६५
5. जोशी, एस.डी. और जे.ए.एफ. रूडबर्नः अनुवाद और प्रवासी साथियों के साथ पाणिनी की अष्टाध्यायी, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली - 1991-2007
6. जोशी, एसडी और जेएएफ। रुडबर्गेनः व्याकरण-भाषा, समर्थार्थिक, अंग्रेजी अनुवाद व्याख्या और टिप्पणी, पूना विश्वविद्यालय, पूना - 1968
7. जिज्ञासु, ब्रह्मदत्त और प्रज्ञादेवी, प्रथम-क्रमः रामलाल

www.ignited.in

Corresponding Author

Dr. Badlu Ram Shastri*

Lecturer in Sanskrit, B.S.R. Govt. Arts College, Alwar, Rajasthan